पाठगत प्रश्न-2.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रहीम के अनुसार खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति और मदपान के अतिरिक्त और कौन-सी चीज़ छिपाए नहीं छिपती?

   (क) कत्था ☐ (ग) ऊँचा कुल ☐

   (ख) खुशबू ☐ (घ) चोरी ☐

2. 'अब दादुर बक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?

   (क) मूर्ख मंच पर आ पहुँचे ☐

   (ख) समझदारों की इज्ज़त होती है ☐

   (ग) मेंढकों ने कूकना शुरू कर दिया ☐

   (घ) कोयल ने मौन साध लिया। ☐

3. "पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन
   अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन"
   – ऊपर दिए गए दोहे में कौन-सा अलंकार है?

   (क) दृष्टांत ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) रूपक ☐ (घ) अन्योक्ति ☐

2.2.3 अंश-3

दोहा-7

आगे बढ़ने से पहले एक प्रसिद्ध कवि वृंद का दोहा फिर से पढ़ लेते हैं।

करत-करत अभ्यास तें,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें,
सिल पर परत निसान।।

आप देख रहे हैं न कि इस दोहे में कुछ ख़ास बात कही गई है! इसमें कुछ करने पर बल दिया गया है! क्या करने पर? जी, हाँ! अभ्यास करने पर। यह अभ्यास क्या होता है, जानते हैं? कहाँ-कहाँ आपने यह शब्द पढ़ा या सुना है, याद कीजिए। अभ्यास, रियाज़ ..... अब कुछ याद आया? हाँ, संगीत में, खेल में .....

आपको पता होगा कि संगीत सीखने वाले ही नहीं, बल्कि संगीत के बड़े-बड़े पंडित और उस्ताद भी रोज़ाना रियाज़ करते हैं। रियाज़ का अर्थ अभ्यास ही होता है। आपने बड़े संगीतज्ञों का साक्षात्कार या भेंटवार्ता/इंटरव्यू सुना या पढ़ा होगा। वे बताते हैं कि वे दिन में दस से बारह घंटे तक रियाज़ (अभ्यास) करते थे। नए सीखने वालों को भी वे अभ्यास पर अधिक समय देने की सलाह देते हैं। इसी तरह आपने खिलाड़ियों को

टिप्पणी

भी देखा होगा कि वे प्रतिदिन कई घंटे का समय अपने खेल के अभ्यास पर ख़र्च करते हैं। आपने समाचारों में भी देखा-सुना होगा कि किसी भी मैच से पहले पूरी टीम एक बार अभ्यास करती है। आपको शायद यह भी पता हो कि वकील और डॉक्टर तो अपने पूरे के पूरे काम को ही प्रैक्टिस (अभ्यास) कहते हैं।

आइए, इस दोहे के भाव को समझने से पहले कुछ और बातें जान लें।

इस दोहे में कवि ने कहा है कि अभ्यास करते-करते यानी, निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है। कवि ने मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग किया है। 'जड़' का एक तो आम अर्थ है—किसी भी पेड़-पौधे का वह हिस्सा जो ज़मीन के भीतर होता है और जिसके द्वारा उसे खाद-पानी मिलता है। आप जड़ और चेतन पदार्थ के इन दो भेदों के बारे में जानते हैं :

चित्र 2.5

जड़— वे पदार्थ जिनके अंदर जीवन के तत्त्व नहीं होते, साधारणतः जिनमें ख़ुद बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति नहीं होती।

चेतन— वे पदार्थ, जिनमें जीवन के तत्त्व होते हैं, जिनमें बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति होती है।

तो 'जड़' का अर्थ है ठहरा हुआ, रुका हुआ, धड़कनरहित, बेजान। 'मति' बुद्धि को कहते हैं। अतः जड़मति का अर्थ हुआ—जिसकी बुद्धि का विकास न हुआ हो या जो मूर्ख हो। आम भाषा में इसके लिए 'ठस दिमाग' का भी प्रयोग करते हैं। आमतौर पर ऐसे व्यक्ति को मूर्ख कहते हैं। सुजान भी आप जानते ही हैं— चतुर, बुद्धिमान, विद्वान।

चलिए, अब आपको हम थोड़ा पहले के समय तक ले चलते हैं। आपने कुआँ देखा है? हाँ, ठीक है, आज इनका बहुत कम प्रयोग होता है, पर पहले पानी की ज़रूरत को कुएँ ही पूरा करते थे। एक बाल्टी या घड़ा लिया, उसमें रस्सी बाँधी और कुएँ में लटकाकर ढील देते गए। तल तक पहुँचने पर दो-तीन बार रस्सी को ऊपर-नीचे झटका दिया, बाल्टी में पानी भर गया। अब उसे ऊपर खींच लिया। आपने ऐसा करके या ऐसा होते हुए देखा है कभी? देखा है? वह तो नहीं, जिसमें रस्सी के नीचे ऊपर जाने-आने के लिए

टिप्पणी

घिरनी लगी होती है? घिरनी तो बाद में लगने लगी। उससे पहले कुएँ के चारों तरफ़ पत्थर का फ़र्श बना होता था और रस्सी के इसी पत्थर पर रगड़ खाने से पत्थर पर उतने हिस्से में गहरा गड्ढा बन जाता था।

पत्थर के लिए संस्कृत शब्द 'शिला' है, जिससे हिंदी में 'सिल' शब्द बना है।

अब इस दोहे के भाव और संदेश को हम आसानी से समझ सकते हैं :

कवि कहता है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है; ठीक उसी तरह, जैसे रस्सी के निरंतर आने-जाने से पत्थर पर उसका निशान बन जाता है। इसीलिए, किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।

टिप्पणी

1. जड़मति से सुजान बनने की प्रक्रिया के लिए दैनिक व्यवहार के उदाहरण—'सिल पर परत निसान' का प्रयोग किया गया है, इसलिए यहाँ **दृष्टांत अलंकार** है।

2. क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि लिखने वाली भाषा से बोलने वाली भाषा में अंतर होता है। जी हाँ, लिखने वाली भाषा अक्सर वह होती है, जो पूरे भाषा-क्षेत्र में एक जैसी होती है। इसे 'मानक भाषा' कहते हैं। लेकिन बोली जाने वाली भाषा के दो रूप साथ-साथ मिलते हैं। एक मानक रूप और दूसरा क्षेत्रीय या स्थानीय रूप। मानक रूप हर जगह एक जैसा बोला जाता है। स्थानीय रूप अलग-अलग होते हैं, जैसे— कलकतिया हिंदी, बंबइया हिंदी आदि। इन स्थानीय रूपों के साथ ही, उसी भाषा-क्षेत्र की उपभाषाएँ होती हैं, जैसे— अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि। हर क्षेत्र की उपभाषा के उच्चारण का तरीका और बोलने का लहज़ा भी अलग-अलग होता है। इस दोहे में 'रसरी' ऐसा ही शब्द है। मानक भाषा में शब्द है—रस्सी। इसी रस्सी को ब्रज में 'रसरी' बोला जाता है। दोहे की भाषा ब्रज है।

3. इस दोहे के अर्थ को जानने के संदर्भ में हमने मानक भाषा और उपभाषा में अंतर समझा है। हिंदी की उपभाषाओं को पाँच वर्गों में बाँटते हैं। इन वर्गों में शामिल उपभाषाओं के नाम इस प्रकार हैं :

1.	पश्चिमी हिंदी-वर्ग	:	खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, बुंदेली और कन्नौजी
2.	पूर्वी हिंदी-वर्ग	:	अवधी, छत्तीसगढ़ी और बघेली
3.	बिहारी-वर्ग	:	भोजपुरी, मगही और मैथिली (मैथिली को अब संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है)

4.	राजस्थानी-वर्ग	:	मेवाती, जयपुरी, मालवी और मारवाड़ी
5.	पहाड़ी-वर्ग	:	कुमाउँनी, गढ़वाली आदि

टिप्पणी

दोहा-8

आइए, कवि वृंद का अगला दोहा फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।।

इस दोहे में एक शब्द आया है— 'आरसी'। 'आरसी' किसे कहते हैं, पता है? आरसी का अर्थ है— शीशा या आईना। आरसी एक आभूषण का भी नाम है, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहना करती थीं। इसमें एक शीशा (आईना) लगा होता था। अपने साज-सिंगार के लिए और अपने चेहरे को देखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। निर्मल यानी साफ़-सुथरी आरसी वास्तव में रूप-रंग या साज-सिंगार के अच्छे या बुरे होने को प्रकट कर देती है। आप शीशा देखते हैं। क्या करता है वह, यही न कि जो जैसा है— अच्छा या बुरा, उसे प्रतिबिंबित कर देता है, बता देता है।

तब, इस दोहे का अर्थ हुआ कि आदमी के नयन यानी उसकी आँखें उसके हृदय में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर देती हैं। ठीक उसी तरह जैसे स्वच्छ आरसी भले या बुरे रूप-रंग को व्यक्त कर देती है। अर्थ यह है कि आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता चल जाता है। प्रेम करने वालों की आँखों में चमक होती है। क्रोध हो, तो आँखें लाल हो जाती हैं। अगर शोक है, तो आँसू उमड़ आते हैं, वगैरह...वगैरह। आँखें ही व्यक्ति के मन के भाव को ठीक-ठीक प्रकट करती हैं। बिहारी भी लिखते हैं:

झूठे जान न संग्रहै, मुख सों निकसे बैन।
या ही तैं विधि ने किए, बातन को ये नैन।

मुख से निकले हुए वचन तो झूठे हो जाते हैं (क्योंकि मुँह से कोई भी चीज़ निकले वह जूठी हो ही जाती है) इन वचनों को झूठे जानकर ही कवि ने कहा है कि सच्ची बात तो आँखें ही कह सकती हैं; इसीलिए सच को व्यक्त करने के लिए ही भगवान ने ये नैन दिए हैं।

कवि इस दोहे में बताना चाहता है कि आँखें मनुष्य के हृदय के भावों को प्रकट कर देती हैं। हम उन्हें देखकर समझ सकते हैं कि वह व्यक्ति हमारे प्रति कैसा भाव रखता है।

टिप्पणी

1. 'नैना' शब्द संस्कृत के नयन से बना है, यह तद्भव रूप है। हित से हेत और अहित से अहेत भी ऐसे ही प्रयोग हैं।

2. दृष्टांत अलंकार है।

पाठगत प्रश्न-2.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अभ्यास करने का अर्थ होता है—

   (क) किसी काम को जल्दी करने लगना ☐

   (ख) कार्य-कारण संबंध सीख जाना ☐

   (ग) निरंतर कार्य करके उसमें कुशलता पाना ☐

   (घ) बहस करके सीख जाना ☐

2. हिंदी की किस उपभाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है?

   (क) ब्रज ☐ (ख) भोजपुरी ☐

   (ग) मैथिली ☐ (घ) कुमाउँनी ☐

2.3 दोहा छंद का परिचय

नाम	चिह्न	मात्रा
ह्रस्व (लघु)	1	1
दीर्घ (गुरु)	S	2

आपको कुछ दोहे याद हैं न? आप यह जानते हैं कि पहले कविता लिखने के लिए कवि छंदों का प्रयोग करते थे— आज भी करते हैं। छंद या तो मात्राओं, या वर्णों पर आधारित होता था और निश्चित मात्राओं या वर्णों के बाद उसमें यति (ठहराव या विराम) और तुक का पालन किया जाता था। हिंदी में अधिकांशतः मात्रिक छंदों का प्रयोग किया गया है। दोहा भी एक मात्रिक छंद है।

मात्रा का अर्थ है— उच्चारण में लिया गया समय। उच्चारण-समय के आधार पर ह्रस्व और दीर्घ इकाइयाँ होती हैं। ह्रस्व को 'लघु' भी कहते हैं और इसकी एक मात्रा गिनते हैं तथा इसके लिए '।' चिह्न का प्रयोग करते हैं। दीर्घ को 'गुरु' भी कहते हैं और इसकी दो मात्राएँ गिनते हैं तथा इसके लिए 'S' चिह्न का प्रयोग करते हैं। इसे हाशिए पर दिए गए चार्ट से आसानी से समझ सकते हैं।

तो आइए, अब हम मात्रा गिनना सीखें। हिंदी में अ, इ और उ ह्रस्व स्वर हैं, शेष सभी यानी आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं। इसलिए जहाँ अ, इ, उ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (क, कि, कु आदि) होंगे, वहाँ ह्रस्व अर्थात् एक मात्रा होगी। जहाँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (का, की, कू, के, कै, को, कौ, आदि) होंगे, वहाँ दीर्घ अर्थात् दो मात्राएँ होंगी। इसके अलावा संयुक्त व्यंजनों से पूर्व ह्रस्व (लघु) भी दीर्घ हो जाते हैं; जैसे 'अभ्यास' में 'अ' की दो मात्राएँ होंगी। इसी रक्षक, पंथी, वक्ता में क्रमशः र, पं और व भी गुरु होंगे।

टिप्पणी

अब इस दोहे पर गौर कीजिए :

।ऽ ।ऽ ऽ ऽ ।ऽ	=13
बड़ा हुआ तो क्या हुआ,	
ऽऽ ऽ। ।ऽ।	=11
जैसे पेड़ खजूर	
ऽ।। ऽ ऽऽ ।ऽ	=13
पंथिन को छाया नहीं,	
।। ऽऽ ।। ऽ।	=11
फल लागे अति दूर	

आपने देखा कि इस दोहे में दो पंक्ति और चार चरण हैं।

पहले चरण में 1 + 2 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

दूसरे चरण में 2 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

तीसरे चरण में 2 + 1 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

चौथे चरण में 1 + 1 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

अर्थात् 13, 11, 13, 11 मात्राओं वाले चार चरण हैं। हम दोहे का वाचन करते समय भी इसी हिसाब से ठहराव देते हैं। पहले 13, फिर 11, फिर 13 और फिर 11 मात्राएँ। यह दोहे को पढ़े जाने का तरीका है।

दोहे के दूसरे और चौथे चरण में अंतिम दो वर्ण क्रमशः गुरु और लघु होते हैं, जैसे इस दोहे में 'खजूर' और 'दूर' में अंत के वर्ण 'जू' और 'दू' गुरु हैं तथा 'र' लघु है।

आप ऊपर के दोहे में एक बात और देखेंगे कि दूसरे और चौथे चरण की तुक मिल रही है—**खजूर** और **दूर**। हाँ, यह भी दोहा छंद का आवश्यक नियम है।

दोहा छंद की पहचान

1. **दो-दो चरणों वाली दो पंक्तियाँ**
2. **13, 11, 13, 11 मात्राओं के चार चरण**
3. **दूसरे और चौथे चरण के अंत में गुरु के पश्चात् लघु मात्रा (ऽ।)**
4. **दूसरे और चौथे चरण की तुक में समानता**

क्रियाकलाप-2.2

आपने मात्राएँ गिनना और दोहा छंद को पहचानना सीख लिया है। निम्नलिखित छंदों की मात्राएँ गिनिए और बताइए कि कौन छंद दोहा नहीं है—

(क) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

(ख) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

(ग) रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिनु।

जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

आपने क्या सीखा

1. मनुष्य की पहचान उसके कुल, वर्ण और जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म और व्यवहार से होती है।
2. हमें अपनी आलोचना से घबराना नहीं चाहिए और न ही उसका बुरा मानना चाहिए, बल्कि उन कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
3. हमें ज्ञान के साथ-साथ अपने व्यवहार और चरित्र को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए। व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरकर ही ज्ञान उपयोगी होता है।
4. धन आवश्यकता के अनुसार ही अच्छा होता है। उससे अधिक होने पर व्यसन पालने की अपेक्षा दान देना बेहतर है।
5. ज्ञान की बातें करना वहीं अच्छा होता है, जहाँ उनको सुनने-समझने वाले हों।
6. प्रेम और शत्रुता के भाव छिपाए नहीं जा सकते।
7. निरंतर अभ्यास से मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह ज्ञानी बन जाता है।
8. आँखों से मनुष्य के मन के भावों का पता चल जाता है।
9. दोहा छंद में 13, 11, 13, 11 मात्राओं की यति के साथ चार चरण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण के तुक समान होते हैं।
10. कबीर, रहीम और वृंद ने दोहों में आसान शब्दों में और उदाहरणों के माध्यम से नीति और सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
11. संस्कृत के शब्दों के यथावत रूप **तत्सम** शब्द और ध्वनि के आधार पर बदले हुए रूप **तद्भव** शब्द कहे जाते हैं।
12. हिंदी की अनेक उपभाषाएँ हैं।
13. उदाहरणों (दृष्टांतों) और अलंकारों से भाषा और अभिव्यक्ति का सौंदर्य बढ़ जाता है।

योग्यता-विस्तार

- लगभग 1000 साल से हिंदी भाषा में साहित्य रचा जा रहा है। आसानी के लिए हम इस समय को चार बड़े भागों में बाँट लेते हैं। ये हैं—आदिकाल, भक्तिकाल,

रीतिकाल और आधुनिक काल। भक्तिकाल और रीतिकाल को मिलाकर मध्यकाल भी कहते हैं। कबीर, रहीम और वृंद मध्यकाल के कवि हैं।

- कबीर ने अपने काव्य में भक्ति और नीति का उपदेश दिया है। इतना समय बीत जाने पर भी आम जन-जीवन में किसी बात को समझाने और उस पर बल देने के लिए उनके उपदेशपरक दोहों का प्रयोग आज भी किया जाता है।

- हिंदी भाषा यों तो पूरे भारत में ही समझी और बोली जाती है, पर विशेषतः उन क्षेत्रों को, जहाँ के रहने वालों की मातृभाषा हिंदी या उसकी उपभाषाएँ हैं—हिंदीभाषी प्रदेश कहते हैं। हिंदीभाषी प्रदेश हैं—हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़। हिंदी भाषी प्रदेश से सटे हुए क्षेत्रों में काश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु, बांग्ला और ओड़िया भाषाएँ बोली जाती हैं। इनके अतिरिक्त हमारे देश में तमिल, कन्नड, मलयालम, कोंकणी, असमिया, मणिपुरी, नागा, मिजो आदि भाषाएँ बोली जाती हैं।

- हिंदी के साथ-साथ हिंदीभाषी प्रदेशों में उर्दू भाषा का भी चलन है। यह कई हिंदी भाषी प्रदेशों की द्वितीय राजभाषा भी है। हिंदी और उर्दू के व्याकरण और शब्द-भंडार में काफ़ी समानता है और वाक्य-रचना के नियम भी काफ़ी हद तक समान हैं, लेकिन दोनों की लिपि अलग-अलग है। हिंदी भाषी प्रदेशों में बोलचाल के स्तर पर प्रायः दोनों के मिले-जुले रूप का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'हिंदुस्तानी' कहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित दोहे का भाव स्पष्ट करते हुए अपनी टिप्पणी कीजिए:

   निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
   बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करत सुभाय।।

2. 'गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट—' पंक्ति में 'गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट' का आशय स्पष्ट कीजिए। गुरु–शिष्य के संबंध का आदर्श रूप क्या है?

3. ''जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।।
   दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।''
   — इस दोहे में धन के अर्थ में 'दोऊ हाथ उलीचिए' से क्या अभिप्राय है?

4. 'करत-करत अभ्यास तें...' दोहे में मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

5. निम्नलिखित दोहे में निहित भाव-सौंदर्य का उल्लेख करते हुए अपने अनुभव के आधार पर प्रस्तुत कीजिए :

   नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।।

   जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कहि देत।।

6. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम शब्द छाँटकर लिखिए :

   कुल, सुरा, गुरु, कुम्हार, कुंभ, निदंक, सुभाय, जल, घर, हाथ, काम, पावस, मौन, खून, प्रीति, जहान।

7. निम्नलिखित दोहों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   कबिरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस।
   क्या जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस।।

   रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
   सुन इठलैहैं लोग सब, बाँट न लइहै कोय।।

   प्रश्न

   (i) 'काल गहे कर केस' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   (ii) कबीर ने घमंड करने के लिए क्यों मना किया है?

   (iii) मन की व्यथा को छिपाकर क्यों रखना चाहिए।

7. हिंदी की उपभाषाओं का वर्गवार उल्लेख कीजिए।

8. नीचे दिए गए दोहे में ह्रस्व और दीर्घ का चिह्न अंकित करके मात्राएँ गिनिए :

   जो जल बाढ़ै नाव में घर में बाढ़ै दाम।
   दोऊ हाथ उलीचिए यही सयानो काम।।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. (क) 2. (घ) 3. (ख)

2.2 1. (क) 2. (क) 3. (घ)

2.3 1. (ग) 2. (ग)